निबंध
ESSAY

*निर्धारित समय: **तीन घंटे***
*Time Allowed: **Three** Hours*

टेस्ट कोड / Test Code : 2488

*अधिकतम अंक: **250***
*Maximum Marks: **250***

सामान्य अनुदेश

इस प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका में 32+2 पृष्ठ हैं। प्रश्न-पत्र, क्यू.सी.ए. पुस्तिका के अंत में संलग्न है, जो अलग (वियोज्य) किया जा सकता है और उम्मीदवार परीक्षा के उपरांत अपने साथ ले जा सकते हैं।

रफ कार्य के लिए तीन खाली पृष्ठ (पृष्ठ संख्या. 30-32) दिए गए हैं।

पुस्तिका प्राप्त होने पर, कृपया यह जांच कर लें कि इस क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कोई कमी न हो, फटा हुआ पृष्ठ न हो अथवा कोई पृष्ठ गायब न हो इत्यादि। यदि ऐसा हो, तो इसके बदले नई क्यू.सी.ए. पुस्तिका प्राप्त कर लें।

General Instructions

This Question-cum-Answer (QCA) Booklet contains 33+2 pages. Question Paper in detachable form is available at the end of the QCA Booklet which can be taken away by the candidate after examination.

Three blank pages (Page Nos. 30–32) have been provided for rough work.

On receipt of the Booklet, please check that this QCA Booklet does not have any shortcomings, torn or missing pages etc. If so, get it replaced with a fresh QCA Booklet.

(उम्मीदवार द्वारा भरा जाएगा/To be filled by the Candidate)

पंजीकरण सं./Registration No. : 0801934

अभ्यर्थी का नाम/Name of Student : Manisha Dharre

माध्यम: हिंदी/अंग्रेजी
Medium: Hindi/English

Hindi

तारीख
Date

25/08/23

निबंध
ESSAY

केंद्र
Centre
vision centre
Karol Bag.

निरीक्षक के हस्ताक्षर
Invigilator's Signature

	महत्वपूर्ण अनुदेश	Important Instructions
	उम्मीदवार को नीचे उल्लिखित निर्देश सावधानी से पढ़ लेने चाहिए। किसी भी निर्देश का उल्लंघन करने पर उम्मीदवार को मिलने वाले अंकों में कटौती, उम्मीदवारी रद्द, आयोग के परवर्ती परीक्षाओं के लिए वर्जित करने इत्यादि के रूप में दण्डित किया जा सकता है।	**Candidate should read the undermentioned instructions carefully. Violation of any of the following instructions may entail penalty in the form of deduction of marks, cancellation of candidature, debarment from further Examination of the Commission etc.**
1	(क) अपना पंजीकरण सं. एवं अन्य विवरण केवल प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) में उम्मीदवार के लिए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। (ख) इस पुस्तिका में अन्यत्र कहीं भी अपना नाम, पंजीकरण सं., मोबाइल नं., पता अथवा प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) संख्या न लिखें जिससे आपकी पहचान का खुलासा हो।	(a) Write your Registration Number and other details only in the space provided in the Question-Cum-Answer (QCA) Booklet for candidates. (b) Do not disclose your identity in any manner such as, by writing your Name, Registration number, Mobile number, Address, Question-Cum-Answer (QCA) Booklet No. etc. elsewhere in the Booklet
2	अपनी क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कहीं भी प्रश्नों के वास्तविक उत्तर के अतिरिक्त कुछ न लिखें जैसे कि कोई कविता/दोहा, अभद्र या अपमानजनक अभिव्यक्ति इत्यादि और न ही कोई ऐसा चिन्ह/निशान बनाएं जिसका उत्तर से सम्बन्ध न हो।	Do not write in the QCA Booklet anything other than the actual answer such as couplet, obscene, abusive expression etc., nor put any sign/mark having no relevance to the answer.
3	परीक्षक को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से कोई भी प्रार्थना/धमकी भरी बातें न लिखें।	Do not make any direct/indirect appeal/threat to the examiner.
4	उत्तर अस्पष्ट अथवा गंदी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तर का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।	Do not write answers in bad/illegible handwriting. Such answers may not be evaluated.
5	उत्तर स्याही में ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें, हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।	Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answers. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.
6	प्रवेश पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली जुली भाषा का भी उपयोग न करें।	Do not write answers in medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language either i.e. authorize and unauthorized media together for writing answers.
7	प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।	Write answer at the specific space (right below the question) only. Answers written elsewhere at unspecified places in the booklet shall not be evaluated.
8	यदि आप अपने किसी उत्तर को रद्द करना चाहते हैं तो उसे पेन से काट दें तथा उस पर "रद्द" लिख दें, अन्यथा उसका मूल्यांकन किया जा सकता है।	If you wish to cancel any work, draw your pen through it and write "Cancelled" across it, otherwise it may be valued.

VISION IAS

ABHYAAS MAINS

निबंध

निर्धारित समय: तीन घंटे

टेस्ट कोड : 2488

अधिकतम अंक: 250

प्रश्न-पत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबंध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ व पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

ESSAY

Time Allowed : Three Hours

Test Code : 2488

Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

World limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

VISIONIAS

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

VISION IAS

खंड A और B प्रत्येक से **एक-एक** विषय चुनकर **दो** निबंध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों में हो :

Write **two** essays, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each : 125 x 2 = 250

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

खण्ड – A / SECTION – A

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।

It is easier to build strong children than to repair broken men.

2. कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।

A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

3. जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।

Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

4. इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।

History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

खण्ड – B / SECTION – B

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।

The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।

The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।

Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।

Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

खण्ड – A / SECTION – A

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।
It is easier to build strong children than to repair broken men.

2. कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।
A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

3. जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।
Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

4. इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।
History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है

मगध साम्राज्य का शासक घनानंद ~~कुख्या~~ बर्बरता और अनैतिक शासन के लिए कुख्यात था तब आचार्य चाणक्य ने इस टूटे हुए वयस्क अर्थात अपने नैतिक मूल्यों और दायित्वबोध से अनजान शासक की बजाय चंद्रगुप्त मौर्य के रूप में उस बच्चे को प्रशिक्षित किया जो अखंड भारत का निर्माण कर सके क्योंकि वे जानते थे कि टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है जो भविष्य की बागडोर कुशलता से संभाल सकते हैं।

निबंध के शीर्षक के पर- "टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है" पर विचार किया जाए तब प्रथम प्रश्न टूटे हुए वयस्क का है की यह कौन है तथा इसकी मरम्मत करना कठिन क्यों है? टूटे हुए वयस्क को एक व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र के रूप में समझा जा सकता है नाजी जर्मनी का शासक हिटलर एक टूटे हुए वयस्क के रूप में समझ सकते है जो जर्मनी में हुए नरसंहार के लिए उत्तरदायित्व था, किंतु अंतत उसने आत्महत्या की क्योंकि वह जानता गया कि शक्ति का दुरुपयोग किया जा चुका है तथा इस रास्ते में वह इतना आगे बढ़ चुका है कि मरम्मत संभव नहीं है।

यदि बात भारतीय समाज की जाए तो सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन के दौरान सती प्रथा, बालविवाह, कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुप्रथाएं प्रचलित थी जिसके विरुद्ध राजाराममोहन राय, दयानंदसरस्वती, ज्योतिबाफूले जैसे सुधारक ने कार्य किया क्योंकि ये कुप्रथाएं इतनी अमानवीय व अनैतिक थी कि इनमें थोड़ा-सा सुधार

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

करने पर ये कुप्रथाएं समाज में बनी रहेगी और दीमक की तरह समाज के विध्वंस का कारण बनेगी।

शीर्षक का एक फलक अंतरिक्ष व तकनीक के क्षेत्र में भी जहाँ इसरो द्वारा PSLV के परीक्षण के दौरान देखा की क्रायोजेनिक इंजन की आवश्यकता मिशन के लिए आवश्यक है तथा PSLV के जरिए अंतरिक्ष की सीमाओं में आगे बढ़ना अब संभव नहीं मरम्मत द्वारा अर्थात् तकनीकी में थोड़ा परिवर्तन व संशोधन किया जा सकता था किंतु फिर भी ये सौरमंडल की अपार संभावना को खोजने में असमर्थ हो सकता था।

भारतीय अर्थनीति पर विचार करने में पर भी यही दृष्टिपात होता है कि जब आज़ादी के बाद भारतीय कृषि व्यवस्था पुरातन व रूढ़िवादी रूप में प्रचलित है बीजों की गुणवत्ता, भूमि सुधार सिंचाई व्यवस्था इत्यादि मुद्दे व चिंताएं थी जिनमें परिवर्तन हेतु अथाह वित्त व तकनीक की आवश्यकता होती किंतु फिर भी कृषि के जड़ बने की संभावना रहती क्योंकि भारतीय कृषक खेती को केवल 'पेट भर अनाज उपजाने' के रूप में देखते थे।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

भारतीय राजनीति में संसद के सिंहासनों पर अपराधी व अनैतिक प्रतिनिधियों की तादत बढ़ रही जिनकी मरम्मत अर्थात् चुनाव सुधार को लेकर कई मुद्दे उठे हुए हैं परंतु इसके लिए न्यायिक विलंबता को कम करना, निर्वाचन आयोग को पर्याप्त शक्ति करना, मतदाता जागरूकता, पार्टी लोकतंत्र, राजनीति इच्छाशक्ति इत्यादि पर विचार करने में लंबा वक्त लग सकता है।

पर्यावरण के क्षेत्र में भी ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, कार्बन उत्सर्जन को लेकर चर्चाएँ हो रही हैं कंपनियां उत्सर्जन कम करने के लिए मौजूदा उपकरणों में ही संशोधन कर रही हैं किंतु वे अपर्याप्त हैं तथा वे कार्बन डाईऑक्साइड में कार्बन न्यूट्रल की जगह कार्बन उत्सर्जक बनने लग जाते हैं। लघु द्वीपीय देशों की तो लगातार शिकायत रही है कि विकसित देशों के कारण बढ़े ग्लोबल वार्मिंग का खामियाजा उन्हें सुनामी, बाढ़, अत्यधिक वर्षा, सूखा इत्यादि के रूप में उठाना पड़ रहा है।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

विचारणीय विषयों में से एक मजबूत कार्यों के निर्माण का भी हो सकता है कि उनका निर्माण करना आसान क्यों है तथा इसके लिए उपकरण क्या हो सकते हैं। चंद्रगुप्त मौर्य जैसे मजबूत व्यक्ति का निर्माण करते समय चाणक्य ने शिक्षा, प्रशिक्षण, समाजीकरण नैतिक मूल्यों, अनुभव व कल्पनाओं इत्यादि उपकरणों का सहारा लिया था इसलिए कहा भी जाता है -

"पक्के घड़े को फिर से बनाने की बजाय नया घड़ा निर्माण करना आसान है"

मजबूत व्यक्तियों के निर्माण के इसी तरह के उदाहरण हमें इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति, जापान की औद्योगिक क्रांति, भारत के स्वतंत्रता संग्राम, लोकपाल बिल आंदोलन, सूचना के अधिकार की मांग जैसे आंदोलनों व क्रांतियों में देखा जा सकता है जब पुरातन व परंपरावादी व्यवस्था को बदलने के लिए मजबूत इरादे, साहस, दृढ़ता जैसे मूल्यों ~~के बल पर~~ को लेकर राष्ट्र, समाज व व्यक्ति आगे बढ़े।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान होने के कारणों की पड़ताल की जाए तो पहला ही मिलता है - जिज्ञासा, अज्ञानता, सिखने की ललक, नवीनता, ऊर्जा, लचीलापन जो उन्हें वातावरण के अनुसार ढलने में सहायो सहयोगी होता है मजबूत बच्चों के निर्माण के उपकरण के रूप में शिक्षा, सामाजीकरण की प्रक्रिया, वातावरण, स्कूल, परिवार इत्यादि होते है जो उन्हें एक आकार देते है जिससे वे एक स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक हो। A. P. J. अब्दुल कलाम जी कहा भी है कि - "यदि किसी राष्ट्र को भ्रष्टाचार व स्वस्थ सुंदर मनों वाला बनाना है तो उसमें तीन लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है - पिता, माता व शिक्षक।"

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय गांधीजी के ब्रिटिश हुकुमत के विरुद्ध अहिंसा, सत्याग्रह, असहयोग, सविनय जैसे उपकरण क्रांति के उस मजबूत बच्चे की तरह विकसित हुए जो आज भी भारतीय समाज, शासन व अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के लिए अनुकरणीय है क्योंकि उन्होंने स्वतंत्रता के लिए हिंसा, क्रांति, हथियार जैसे

उपकरणों की ~~बनाय~~ मरम्मत कर प्रयोग के करने के बजाय नए उपकरणों व माध्यमों की कल्पना की जिससे भारतीय जनमानस को अधिकतम हिस्सा स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो सके।

यदि बात भारत - पाकिस्तान के अंतरद्विपीय संबंधों की जाए तो एक-दो मुद्दों जैसे कश्मीर समस्या, सीमा-विवाद के अलावा कोई विषय नहीं होते हैं जिसन पर लगभग 77 वर्षों से राजनीतिक व कूटनीतिक स्तर पर संबंधों को ठीक करने की कवायद चल रही है किंतु प्रगति का ग्राफ अभी भी ~~बहुत~~ नगण्य स्तर पर ही है इसलिए नए क्षेत्रों जैसे - पर्यावरणीय मुद्दों में हिन्दु-कुश व हिमालय पर संयुक्त अध्ययन अर्थात् तीसरे ध्रुव को संरक्षित करने, खाद्य सुरक्षा के लिए सहयोग, द्विपक्षीय व्यापार, साझी संस्कृति इत्यादि कार्यों पर काम करना आसान है जिससे दोनों देशों के संबंधों में पारस्परिकता, सह-अस्तित्व, सह-सम्बंध हो सके।

"ये नदियां, पर्वत, हवा को कोई न रोके कोई सरहद इन्हें न रोके।"

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

यथातथ्य यदि शीर्षक को गहराई में देखा विवेचित किया जाए तब एक पहलू यह भी हो सकता है टूटे हुए वयस्क की भी मरम्मत की जाए तथा मजबूत बच्चों का भी निर्माण हो सके जैसे जनसांख्यिकीय लाभांश की स्थिति में भारतीय समाज व अर्थव्यवस्था को चाहिए कि वह टूटे हुए वयस्कों की भी मरम्मत करे ताकि आर्थिक समृद्धि, प्रति व्यक्ति आय, आर्थिक विकास संभव हो इसके लिए आने वाली पीढ़ियों पर निर्भर होने की बजाय समय की आवश्यकता है कि अभी मरम्मत की जाए। इंडिया स्किल्स रिपोर्ट के अनुसार केवल 46% भारतीय कार्यबल ही रोजगार योग्य है तथा केवल 4% के पास ही कौशल युक्त प्रशिक्षण है अतः मरम्मत के रूप में कौशल प्रशिक्षण, व्यावसायिक शिक्षा, वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, स्किलिंग-अप-स्किलिंग-रि-स्किलिंग जैसे प्रयास अनिवार्य है।

अंतरिक्ष के क्षेत्र में तो वर्तमान में रि-यूजबल (Re-usable) रॉकेट बनाने की

रेस चल रह रही जिसमें मौजूदा रॉकेट को ही पुनः प्रप्त करने मरम्मत द्वारा वापस अंतरिक्ष में भेजा जाएगा साथ ही नए बच्चों के रूप में व मजबूत बच्चों के रूप में आदित्य L1 मिशन, चंद्रयान-3, जैसे अनुप्रयोग दिखायी देते है।

बात यदि भारतीय शासन व्यवस्था की जाए तो उसमें भी पुरानी योजनाओं व कार्यक्रमों को मरम्मत कर फिर लागू किया जा रहा है तथा साथ ही मजबूत बच्चों का निर्माण भी समानांतर रूप में चल रहा है जैसे प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अपनी पूर्ववर्ती योजना फसल बीमा योजना व कृषि बीमा योजना का संशोधित रूप है वहीं मजबूत बच्चों के रूप में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण तकनीकी प्रयोग है।

भारतीय समाज की बे तो यह मान्य तथ्य है कि- "सुबह का भूला जब शाम को घर लौट आए तब उसे भूला नहीं कहते है।"

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

जहाँ टूटे हुए बच्चों के रूप में हमारे पारंपरिक मान्यताएं, प्रथाएं हो सकती हैं जो शहरीकरण, औद्योगीकरण व वैश्वीकरण के कारण टूट चुकी हैं किंतु अब आवश्यकता उनके मरम्मत के साथ ही मजबूत बच्चों के निर्माण की है उदाहरण के तौर पर भारतीय लोगों की जीवनशैली पर्यावरण के अनुकूल मानी जाती है जिसमें घरों का निर्माण, वेशभूषा, खान-पान इत्यादि में पर्यावरणीय घटक शामिल हैं किंतु उपभोक्तावादी व भौतिकवादी संस्कृति के बढ़ते प्रचलन में वे टूट चुके हैं अतः प्रधानमंत्रीजी का 'LIFE मिशन' इसी की मरम्मत में सहायक होगा तथा मजबूत बच्चों के रूप में डिजास्टर रेजिलिएन्ट इंफ्रास्ट्रक्चर, ग्रीन ग्रोथ, क्लाइमेट फ्रेंडली एग्रीकल्चर के रूप में देखा जाता है।

अंततः संविधान के मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्यों, नीति नीति निदेशक तत्व, वैदिक दर्शन, बौद्ध-जैन, इस्लाम व अन्य धार्मिक ग्रंथों में भी यह

यह स्वीकार्य तथ्य है कि दूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है किंतु प्रयास के स्तर पर हमें टूटे हुए वयस्क की मरम्मत को भी ध्यान में रखना चाहिए ताकि वे अपने अनुभव, शिक्षा, आचरण, ज्ञान, ऊर्जा को राष्ट्र व समाज के विकास में सकारात्मक जन कल्याण का कार्य कर सकें। गांधीजी का कथन हमारे लिए प्रेरणास्रोत हो सकता है कि -

"जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैं पहले स्वयं अपने में लाए"

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidate must not write on this marg

खण्ड – B / SECTION – B

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।

The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।

The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।

Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।

Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी

एक घटना इंग्लैण्ड में 16वीं शताब्दी ईसवी में घटी जब प्लेग के कारण सब जगह निराशा व नकारात्मकता फैल गयी थी जनमानस जीवन व अस्तित्व के संकट से गुजर रहा था इन्हीं दिनों एक बच्चा स्वप्न में बैठा अपने जीवन के सपने बुन रहा था वह ऊर्जा व उत्साह से भरा था कि प्लेग के खत्म होने पर वह फिर से स्कूल जाएगा और

डोल्लों - शिशुओं से फिर चर्चाएँ करेगा। तभी उसने देखा की पेड़ से एक सेब नीचे गिरा है फिर क्या था सारी जिज्ञासा व उत्साह इसी घटना पर टिक गई कि क्यों सेब नीचे ही गिरा, ऊपर-नीचे या दांए या बायें क्यों नहीं गिरा और अंततः उसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज कर ली क्योंकि उसने अपना चेहरा रोशनी की तरफ कर रखा था इसलिए उसे छाया महसूस नहीं हो पायी।

विचार का पहला ही विषय हो सकता है कि रोशनी क्या है? तथा अपना चेहरा रोशनी की और क्यों रखना चाहिए? तथा छाया के प्रति हमारी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? रोशनी के रूप में ऊर्जा, आशा, विकल्प, संभावनाओं, कल्पनाओं, दिशाओं, सकारात्मकता, रचनात्मकता के समुच्चय को स्वीकार किया जा सकता है जो आगे बढ़ने के लिए ~~प्रेरित~~ के

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

प्रेरणा व मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकते है

अगला विचारणीय प्रश्न है कि हमें रोशनी की ओर चेहरा क्यों रखना चाहिए इसका कारण ये है कि रोशनी हमें निराशा, निरर्थकताबोध, अकर्मण्यता, संशय, अनिश्चितता जैसी परिस्थितियों से बाहर निकालने में सहायक होती है तथा जीवन की रोचकता व जीवंतता के प्रति अथवा परिवर्तन के प्रति हमें अधिक सहज रूप में बढ़ने का साहस प्रदान करती है। छाया के रूप में हमें नकारात्मकता का अनुभव होता है तथा जीवन दिशाहीन-सा प्रतीत होता है

ऐतिहासिक उदाहरणों को लिया जाए तब भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. बी.आर. अंबेडकर के योगदान पर विचार किया जा सकता है जब उन्हें अपनी प्रारंभिक शिक्षा अध्ययन के दौरान अमानवीय

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

घरनाओं जैसे मटके से पानी निकालकर नहीं पीना, स्कूल में सब बच्चों से दूरी बनाकर बैठना इत्यादि से गुजरना पड़ा था इसकी छाया कैम्पस में से हताश हो वे शिक्षा अध्ययन स्थगित कर सकते थे किंतु वे रोशनी के आंचल को थामे हुए थे कि वे एक ऐसी पुस्तक का निर्माण करेंगे जो सभी से समानता का व्यवहार करे"। उसी साहस, दृढ़ता, सत्यनिष्ठा का परिणाम हमें विश्व के सबसे मजबूत संविधान के रूप में प्राप्त हुआ।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय भी ब्रिटिश साम्राज्य की बर्बरता व अमानवीयता की गहरी छाया थी किंतु महात्मा गांधी, सरदार पटेल, अबुल कलाम आजाद, सरोजनी नायडू जैसे व्यक्तियों ने ब्रिटिश लाठी का प्रतिउत्तर अहिंसा, सत्य, असहयोग के रूप में दिया क्योंकि वे नैतिक रोशनी से परिचालित थे।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

गौरतलब है कि ज़रूरी नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति रोशनी की ~~तरह~~ तरफ ही देखे क्योंकि रोशनी की तरफ देखने के लिए उस व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के पास भी वह क्षमता होनी चाहिए कि वह उसे देख सके तथा उसका उपयोग राष्ट्र, समाज हित में किया जा ~~सकता~~ सके। इसके लिए व्यक्ति में उचित शिक्षा, नैतिक मूल्य, परंपराएं होनी चाहिए जो उसे सही दिशा व विकल्प की पहचान करने की क्षमता प्रदान करे

Covid-19 महामारी के समय में जब चारों तरफ मृत्यु व अनिश्चितता की स्थितियां बढ़ रही थी 'टीका निर्माण, जांच, दवा निर्माण इत्यादि धीमा होने पर विश्व स्तर पर वैज्ञानिकों व चिकित्सकों ने इसे एक अवसर व चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए युद्धस्तर पर प्रयास किये जैसे टीका निर्माण, दवा निर्माण,

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

चिकित्सीय सुविधाओं इत्यादि क्षेत्र पर नए विकल्प उपलब्ध हुए क्योंकि वैज्ञानिक व चिकित्सकों ने महामारी के नकारात्मक पक्ष की बजाय सकारात्मक पक्ष पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जिससे अस्पतालों, क्लीनिकों, लैब्स इत्यादि पर सकारात्मक वातावरण व ऊर्जा बनी रही जो लोगों की जिजीविषा को बनाये रखे तथा मुसीबत से बाहर निकलने का साहस मिलता रहे।

वर्तमान में औद्योगिक क्रांति 4.0 के लिए कई आविष्कार, शोध व विकास कार्य प्रगति है जो मानव जीवन को बेहतर करने में अत्यधिक सहायक होंगी वहीं कुछ लोगों का मानना है कि रोबोटिक्स, AI, मशीन लर्निंग इत्यादि के कारण रोजगार हानि, मनुष्य के अस्तित्व की संकट, व अनिश्चितता बढ़ेगी। इनका ध्यान तकनीक की छाया पर अधिक है रोशनी पर नहीं।

मलाला युसुफजई भी एक ऐसा ही उदाहरण है जिन्होंने पाकिस्तान के स्वात वैली में तालिबान शासन के दौरान अपनी शिक्षा व समानता की मांगे सामने रखी अर्थात् जीवन की संभावनाओं के रास्ते • तलाश रही थी किंतु उनको भुगतान उन्हें अपने ~~भाग~~ शरीर पर तालिबानी गोलियों को स्वीकार कर करना पड़ना।

चेहरा रोशनी की ओर रखने के लिए भी व्यक्ति व समाज को कई नुकसान व चुनौतियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि छाया अर्थात् नकारात्मक अथवा अनैतिक व्यवस्था अंधकार के बीच किसी सकारात्मक ऊर्जा अथवा आशा को पनपने देने का सदैव विरोध करने की कोशिश करती है। उदाहरण के तौर पर 6वीं शताब्दी के बी.सी. के यूनान की शासन व्यवस्था क्रूरतम रूप से चल रही थी

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

जहाँ विचारों व वाक् की स्वतंत्रता नगण्य थी किंतु सुकरात ने चर्चा की संस्कृति की शुरुआत की थी इसलिए शासकों का आदेश हुआ कि सुकरात को जहर का प्याला पीना होगा। किंतु सुकरात के विचारों की रोशनी आज भी हमें प्रेरित कर रही है -

"उस प्याले में जहर था ही नहीं वरना सुकरात मर गया होता"

मतलब विचार यह भी हो सकता है कि रोशनी कितनी गहरी व व्यापक है तथा उसकी छाया का रूप भी कैसा है क्योंकि हमारे पास ऐसे उदाहरण मौजूद हैं तकनीक-विज्ञान की दुनिया में किए गए आविष्कारों व शोध रोशनी के रूप में कम, छाया के रूप में हम पर अधिक प्रभाव डालते हैं जैसे न्यूक्लियर एनर्जी का रोशनी के रूप में ऊर्जा सुरक्षा, चिकित्सीय आविष्कार व रोग निदान में कार्य कर सकती है

किंतु इसकी छाया हिरोशिमा व नागासाकी के परमाणु बम विस्फोट व न्युक्लियर वार के रूप में दिखायी देती है।

उज्ज्वल स्थिति यह हो सकती है कि रोशनी की ओर चेहरा किया जाए अर्थात् संभावनाओं का दोहन किया जाए साथ ही छाया का भी ध्यान रखा जाए कि इसका प्रभाव हमारे ऊपर किस रूप में हो रहा है तथा समय-समय पर इसमें परिवर्तन व संशोधन अथवा संभावनाओं की तलाश उत्साह व साहस के साथ की जानी चाहिए। उदाहरण के तौर पर भारतीय संविधान को लिया जा सकता है जिसकी न्यायिक व्याख्या द्वारा निजता का अधिकार, स्वास्थ्य का अधिकार, गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार रोशनी के परिणामस्वरूप मिले हुए साथ ही IPC-377 का उन्मूलन छाया को स्वीकार करने और इसमें

परिवर्तन करने की जिजीविषा के रूप में दिखायी देंगे। महात्मा बुद्ध ने कहा भी है कि- "जैसा हम सोचते हैं वैसा हम बन जाते हैं"

वस्तुतः रोशनी की सकारात्मकता, ऊर्जा, उमंग, दिशा, संभावनाएं मानवता की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण रही है जिसने आग के आविष्कार से लेकर परमाणु ऊर्जा निर्माण, पहियों के आविष्कार से लेकर वायुयान निर्माण, परिवार निर्माण से लेकर राज्य निर्माण, बच्चों से लेकर नागरिक निर्माण, समाज से लेकर सभ्यताओं के निर्माण तक में परिलक्षित होता है जिन्होंने राष्ट्र, समाज, व्यक्ति के लिए यह आशा की किरण व विकल्प उपलब्ध करवाया रखा। छाया के स्तर पर हमारे समाज, राष्ट्र, व्यक्ति, संविधान इत्यादि की समता होनी चाहिए की वह हर बुरी चीज को

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए Candidates must not write on this margin

बदलने का प्रयास करें। ताकि न्यूटन के घर के बाहर का पेड़ हर बच्चे के घर के बाहर मौजूद हो सके और वह पेड़ बार-बार सेब गिराए और हम आइंस्टीन, स्टीफन हॉकिंग, एस. सोमनाथ, एपीजे कलाम, महात्मा गांधी, अंबेडकर, विवेकानंद, अरस्तू, शंकराचार्य जैसे हस्ती मिलते रहें और मानव विकास व कल्याण का पहिया अधिक गति व शक्ति के साथ आगे बढ़े और जीवन व अंतरिक्ष की अपार रोशनी की संभावनाओं में विकसित हो।

"इस जीवन का उद्देश्य नहीं है
श्रांत भवन में टिके रहना
लेकिन पहुँचना उस सीमा तक
जिसके आगे राह नहीं।"

अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखायी नहीं देगी

Intro → न्यूटन → प्रयोग

Body → ① रोशनी क्या है?

② रोशनी की तरफ चेहरा क्यों रखना चाहिए
छाया क्यों नहीं दिखायी देगी
↳ क्या लाभ है
↳ हानि क्या है
↳ उदाहरण → सामाजिक — R.M.
↳ दयानंद
↳ गांधी
↳ अंबेडकर
↳ मार्टिन लूथर
↳ नेल्सन मंडेला
↳ आंग सान सू की

Rough work

वर्तमान में
↳ शीत-युद्ध पार
↳ न्यूक्लियर वार
↳ अंतरिक्ष दौड़
↳ संयुक्त राष्ट्र
↳ लैंगिक समानता < महिला / ट्रांसजेंडर
↳ कानून
↳ आंतरिक सुरक्षा
↳

③ रोशनी की तरफ चेहरा देखने के लिए योग्यता क्या चाहिए

④ किंतु व्यक्ति सिर्फ रोशनी की तरफ देखने भर से नहीं चलता बल्कि छाया भी देखनी ही होनी चाहिए
↳ ताकि संतुलन बना रहे
↳

Conclusion →

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

SPACE FOR ROUGH WORK

① टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान –

→ हरित क्रांति

Intro → कहानी सदियों पूर्व की है कि जब एक गाँव में लोगों ने पेड़ों को काट डाला था, पूरा गाँव सूखे से त्रस्त था।

Body → ① टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में

↳ तकनीकी रूप से → ↳ पर्यावरण → LPFE, पंचायत

② ↳ सामाजिक → ↳ अंतर्विरोध → रिश्तों का नाजुक बनना ↳

↳ समाज

↳ राष्ट्र ↳ शिक्षा →

↳ राजनीति → आधुनिकता, महिला आरक्षण, जनसंख्या,

↳ अर्थशास्त्र

↳ इतिहास ↳ LPG, हरित क्रांति, जनसांख्यिकीय लाभांश

↳ खाद्य सुरक्षा → महात्मा गाँधी, भगत सिंह, अंबेडकर, सावित्री बाई फुले

↳ गरीबी

↳ • खगोल → अंतरिक्ष

↳ ↳ चंद्रयान-3,

② मजबूत बच्चों का निर्माण करना → PSLV

↳ क्या करना

Conclusion → ↳ उदाहरण → राष्ट्र, जापान, इंग्लैण्ड, भारत, समाज

↳ कैसे करना → शिक्षा, नैतिक मूल्य, पारिवारिक वातावरण

↳ क्या लाभ होंगे →

↳

③ किंतु यहीं भी सावधानी बरतना चाहिए कि टूटे हुए वयस्कों के अनुभव जीवन अनुभव है, जो मजबूत बच्चों के लिए आवश्यक हो सकता

SPACE FOR ROUGH WORK

बुद्ध → जैसा सोचते है आप वैसे ही बन जाते है।

गांधी → जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते है, वह पहले स्वयं में लाइए

बेंजामिन → अनुकरण चापलूसी की संस्कृति नहीं होता है किन्तु

सुकरात → उस प्याले में जहर था ही नहीं वरना सुकरात मर गया होता

→ इस जीवन का उद्देश्य नहीं है, मात्र भवन में टिके रहना

निदा फाजली → जिस आदमी को भी देखना हजार बार देखना क्योंकि उसमें भी होते दस-बीस आदमी।

निदा → धूप में निकलो घटाओं में नहाकर देखो जिंदगी क्या है, किताबों को हटाकर देखो

आइन्स्टीन →
गॉडसे → हमारी पगडंडी ने गाँव का मौसम गुलाबी है →

आइंस्टीन → आने वाली पीढ़ियां यह यकीन नहीं कर पाएंगी की हाड़मांस का ऐसा भी व्यक्ति कभी दुनिया में रहा होगा।

SPACE FOR ROUGH WORK